'यौनिकता, जेन्डर और अधिकार – एक अध्ययन' क्रिया द्वारा संचालित एक सप्ताह का आवासीय अध्ययन कार्यक्रम है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में यौनिकता, अधिकार, जेन्डर, स्वास्थ्य तथा सांस्कृतिक सामाजिक और कानूनी मामलों के बीच के संबंध के बारे में जानकारी दी जाती है।

13–18 फरवरी 2012
टेरी, गुड़गाँव

पाठ्यक्रम

'यौनिकता, जेन्डर और अधिकार – एक अध्ययन' एक सप्ताह का आवासीय प्रशिक्षण है जिसमें यौनिकता के सिद्धान्तों पर चर्चा की जाती है और यौनिकता, जेन्डर और स्वास्थ्य के अंतरसंबंधों पर गौर किया जाता है। यौनिकता का अध्ययन एक जटिल क्षेत्र है जो कई विषयों और कार्यक्षेत्रों के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिये इस कोर्स की विषय वस्तु भी यौनिकता की वैचारिक व सैद्धान्तिक अध्ययन पर आधारित होगी जो सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों और उनके आपसी संबंधों से जुड़ी हुई होगी। पढ़ाने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाएगा – जैसे क्लास रूम में विचार विमर्श, समूह कार्य, केस स्टडी, उत्प्रेरक अभ्यास, चर्चा कहानियां, फिल्में आदि।

इस पाठ्यक्रम को संचालित करने वाले समूह में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न मुद्दों पर कार्य करने वाले अनुभवी व्यक्ति शामिल होंगे जो ना सिर्फ इन मुद्दों पर कार्य करते हैं बल्कि जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन मुद्दों को उजागर भी किया है। इस पाठ्यक्रम में सभी कार्यक्रम हिन्दी में होंगे जिसमें पढ़ाई, लिखाई, चर्चा, फिल्में आदि शामिल हैं। अतः प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि वे हिन्दी भाषा से भलीभाँति परिचित हों और उसे लिखना पढ़ना जानते हों, क्योंकि इसमें पढ़ने के लिए हिन्दी में सामग्री भी दी जाएगी।

विषय वस्तु

यौनिकता और अधिकार
यौनिकता, जेन्डर और कानूनी व्यवस्था
यौन, प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार
यौनिकता का प्रतिनिधित्व
यौनिक विभिन्नता और अधिकार
यौनिकता और मानसिक स्वास्थ्य
यौन कार्य, यौनिकता व अधिकार

आयोजक

क्रिया महिलाओं व किशोरियों को अपने मानव अधिकार की बात कहने, मांग करने और उन तक पहुंचने के लिए सशक्त करती है। क्रिया यह कार्य महिलाओं के बीच नेतृत्व क्षमता बढ़ाकर, नागरिक संस्थाओं को मज़बूत बनाकर, सामाजिक आंदोलनों को प्रभावित कर और सामाजिक बदलाव के लिए नए नेटवर्क बनाकर करती है। क्रिया भारत में स्थित एक वैश्विक संस्था है जो कि मानव अधिकार को एक कारगर सामाजिक बदलाव का यंत्र बनाने और मानव अधिकार प्रक्रिया, जागरूकता और सिद्धांतों को समाज के ढांचे में सम्मिलित करने के लिए कार्य करती है।

प्रतिभागी

इस पाठ्यक्रम के लिए वे सभी महिलायें आवेदन कर सकती हैं जो यौनिकता, स्वास्थ्य या जेन्डर के मुद्दों तथा मानव अधिकार के संदर्भ में महिलाओं के साथ कार्य कर रही हैं। आवेदन प्राप्त करने के बाद कुल 25 प्रतिभागियों का इस पाठ्यक्रम के लिए चुनाव किया जाएगा। सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि पूरे पाठ्यक्रम के लिए वे आरंभ से अंत तक कार्यक्रम स्थल पर निवास करेंगे।

स्थान एवं शुल्क/व्यय

'यौनिकता, जेन्डर और अधिकार– एक अध्ययन' का आयोजन गुडगाँव की टेरी (द एनर्जी एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट) संस्था में किया जा रहा है। सभी सहभागियों के प्रशिक्षण, रहने, खाने और यात्रा व्यय की व्यवस्था आयोजक की तरफ से की जाएगी। इस पाठ्यक्रम का आयोजन फोर्ड फाउंडेशन, भारत के आर्थिक सहयोग से किया गया है। क्रिया इस सहयोग के लिए उनका धन्यवाद करती है।

शिक्षकगण

प्रमदा मेनन – एक क्वीयर नारीवादी कार्यकर्ता और स्वतंत्र सलाहकार के रूप में कार्य करती हैं। प्रमदा मेनन पिछले दो दशकों से भी ज्यादा समय से यौनिकता, यौन अधिकार, जेन्डर, महिलाओं के प्रति हिंसा, संस्थागत विकास और बदलाव और जीविका के मुद्दों पर कार्य कर रही हैं। ये क्रिया की सह संस्थापक हैं और क्रिया में कार्यक्रम निर्देशिका के रूप में 2000 से 2008 तक कार्य किया है। क्रिया की सह संस्थापना करने से पहले उन्होंने दस्तकार (क्राफ्ट से जुड़े लोगों के जीविका के मुद्दे पर कार्य करने वाली संस्था) के एक्जेक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में कार्य किया था।

शालिनी सिंह – सामाजिक विज्ञान की पृष्ठभूमि के साथ शालिनी एक वकील व प्रशिक्षित काउन्सलर हैं। महिला मुद्दों के क्षेत्र में बारह साल से कार्य करते हुए पिछले सात साल से क्रिया के समुदाय आधारित कार्यक्रम से जुड़कर शालिनी महिला हिंसा, जेन्डर, यौनिकता तथा महिलाओं से जुड़े कानून के मुद्दों पर प्रशिक्षण देने व लिखने का कार्य करती हैं।

मीना सेशू – महाराष्ट्र में स्थित, संपदा ग्रामीण महिला संस्था (संग्राम) की संस्थापक तथा महासचिव हैं। यह संस्था यौनकर्मियों को एकत्र करने, अपने ग्राहकों के साथ कॉनडम प्रयोग करने के लिए बातचीत करने तथा अपने अधिकारों की सुरक्षा एवं स्थापना करने के लिए उनकी क्षमता विकसित करती है। ह्यूमन राइट्स वॉच ने उन्हें सन् 2002 में मानव अधिकार रक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया है।

सुमित बौद्ध – सुमित यौनिकता और कानून से जुड़े विषयों पर काम करते हैं। क्वीयर लोगों, दलितों और भारत के प्रवासी श्रमिकों से जुड़े मानवाधिकारों के विषय पर काम करने में उनकी विशेष रूचि है। सुमित ने नैशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया से कानून की डिग्री प्राप्त की है और कानून के ही विषय में स्नातकोत्तर शिक्षा लंदन के लंदन स्कूल ऑफ इक्नॉमिक्स से प्राप्त की है। वे दिल्ली की बार कांउन्सिल में अधिवक्ता और इंग्लैंड तथा वेल्स में नॉन प्रेक्टिसिंग सॉलीसिटर के रूप में पंजीकृत हैं।

रत्नाबोली रे – रत्नाबोली रे कोलकता स्थित संस्था अंजली की संस्थापक और मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। अंजली मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य करती है जिसका उद्देश्य सेवा व चिकित्सा क्षेत्र के प्रणाली में बदलाव लाना है। अंजली भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर सेवाओं के विकास, नीतियों के अध्ययन और मानव अधिकार पर कार्य करती है। रत्नाबोली एक रोग विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक हैं और 15 सालों से स्वास्थ्य सक्रियतावादी के रूप में काम कर रही हैं। 2000 में अंजली के काम के लिए रत्नाबोली को अशोका फेलोशिप से पुरस्कृत किया गया है।

वाणी सुब्रमनियन – वाणी डॉक्यूमेन्टरी फिल्में बनाती हैं और एक नारीवादी सक्रियतावादी हैं। वाणी दिल्ली स्थित स्वायत्त महिला अधिकार समूह, सहेली, से जुड़ी हुई हैं।

राहुल रॉय – राहुल रॉय ने जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, के मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेन्टर से 1987 में फिल्म और टेलीविजन प्रोडक्शन में मास्टर्स किया है। तभी से वे स्वतंत्र रूप से फिल्में बनाते हैं। इनके कार्य का केन्द्र साम्प्रदायिकता, श्रमिक समाज और पुरुषत्व है। इनकी फिल्में विश्व भर में दिखायी गयीं हैं और पुरस्कृत हुई हैं। फिल्में बनाने के साथ राहुल पुरुषत्व पर रिसर्च, लेखन और प्रशिक्षण भी करते हैं। पुरुषत्व पर आधारित इनकी ग्राफिक किताब, 'अ लिटिल बुक ऑन मेन', हाल ही में योडा प्रेस ने प्रकाशित की है।

इसके अतिरिक्त अन्य अतिथि शिक्षकगण भी होंगे जो इन मुद्दों पर कार्य करते हैं और इन मुद्दों पर विशेष कार्य अनुभव रखते हैं।

crea

7, दूसरी मंजिल, जंगपुरा बी, मथुरा रोड़,
नई दिल्ली – 110 014, भारत
फोन: 91 11 24377707, 24378700/01 फैक्स: 91 11 24377708
ई–मेल: crea@vsnl.net वेबसाईट: www.creaworld.org

crea

यौनिकता, जेन्डर और अधिकार– एक अध्ययन

13–18 फरवरी 2012